UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	

CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER	

6013309400

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2008**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **12** printed pages.

SP (SC/TL) T52472/4
© UCLES 2008

UNIVERSITY *of* CAMBRIDGE International Examinations

[Turn over

www.theallpapers.com

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1-6.

लखनऊ के इक्के और ताँगे पर निम्नलिखित लेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अवध की संस्कृति में सुसज्जित घोड़ा परिवहन का साधन और शान का प्रतीक था। मुख्य रूप से तीन प्रकार के ताँगे और इक्के मिलते हैं – बग्गी, फिटन और टमटम। बग्गी बंद डिब्बे की तरह की होती है, तो फिटन और टमटम खुले वाहन हैं, जिन्हें नवाबों द्वारा यात्रा में वरीयता दी जाती थी। किन्तु, ताँगे और इक्के का शाब्दिक अर्थ अधिक अश्व शक्ति की ओर इंगित करता है। इक्के में एक घोड़ा होता है जबकि बग्गी या ताँगे में दो, चार या अधिक घोड़े होते हैं। यह वास्तव में इस्तेमाल करने वाले की सामाजिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 19वीं सदी के प्रारम्भ में अवध के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक माहौल में बदलाव आया। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हल्के वाहनों का निर्माण और इस्तेमाल होने लगा, जिसमें कम से कम अश्व शक्ति लगे। सामान्य बोलचाल में इक्के का अर्थ है इक या एक यानि एक व्यक्ति के इस्तेमाल के लिए। इसके विपरीत ताँगा एक परिवार वाहन था। किन्तु, किफ़ायत की मजबूरी को देखते हुए इक्के में अधिक सँख्या में यात्री बैठाने पड़े। ताँगा अपेक्षाकृत भारी और बड़ा वाहन है, जिसमें पैरों के लिए अधिक जगह होती है और चार से छह वयस्क आगे पीछे कमर लगाकर बैठ सकते हैं।

हर साल इन ताँगों और इक्कों की दौड़ लखनऊ में होती है। इस आर्कषक दौड़ की तैयारियाँ प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का निमत्रंण प्राप्त होने या मीडिया में इसकी घोषणा के साथ ही शुरू हो जाती हैं। जँगी घोड़े इस दौरान सबके लिए आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु होते हैं। उनके बनाव-श्रृँगार का काम शुरू होता है, जो उसी तरह किया जाता है जैसे सौंदर्य प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाली सुँदरियों का किया जाता है। प्रतियोगिता के दिन प्रतिभागी जँगी घोड़े को जो मुखौटा पहनाया जाता है, वह सोने चाँदी या रँगीन चमकदार चादर से बना होता है। एक विशेष साजसज्जा के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के अलँकरण शामिल होते हैं, जिनका इस्तेमाल घोड़े को सिर से खुर तक सजाने के लिए किया जाता है ताकि प्रत्येक इक्के या ताँगे को स्वयं की बेजोड़ पहचान दी जा सके। घोड़े के खुरों का भी श्रृँगार किया जाता है। पुरानी नाल के स्थान पर नई नाल लगाई जाती है। पैरों की सुँदरता बढ़ाने के लिए कशीदाकारी युक्त वस्त्र पैरों में डाले जाते हैं और पीतल या चाँदी के घुँघरू बाँधे जाते हैं। माइक पर घोषणाओं, सीटियाँ बजाने और झंडियाँ दिखाने के साथ ही ताँगे और इक्के वाले अपने-अपने घोड़ों के साथ मोर्चा संभालते हैं। मंच तैयार है, एक गोली हवा में छूटती है और दौड़ शुरू होती है।

www.theallpapers.com

For Examiner's Use

1 बग्गी फिटन और टमटम में क्या अंतर है?

.... [1]

2 अधिक अश्व शक्ति का क्या अर्थ है?

.... [1]

3 सामाजिक आर्थिक बदलावों ने किस तरह वाहनों को प्रभावित किया?

.... [1]

4 ताँगा किस रूप में इक्के से अलग वाहन है?

.... [1]

5 प्रतियोगिता की तैयारी कब शुरू होती है?

.... [1]

6 घोड़ों के पैरों को किस रूप में सजाया जाता है?

.... [1]

[अंक: 6]

www.theallpapers.com

अभ्यास 2 प्रश्न 7

नरेश यादव की उम्र 16 वर्ष है। वह मकान न. 22, सिविल लाइंस, इलाहाबाद में रहता है। टेलि. न. 395759 है। उसे पाँचवीं कक्षा से ही चित्रकला के प्रति विशेष रूचि रही है। उसने दो वर्ष पहले इलाहाबाद में अपने चित्रों की प्रर्दशनी भी लगाई थी। प्रदर्शनी की सफलता से प्रोत्साहित होकर नरेश चित्रकला को ही अपने रोज़गार स्वरूप अपनाना चाहता है। उसे प्राकृतिक सुँदरता आंकने में ज़्यादा दिलचस्पी है। चटकीले रंगों से उसने कई भौगोलिक परिस्थितियों को अपने चित्रों में संजोया है।

नरेश यादव ने समाचार पत्र में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय की कार्यशाला का विज्ञापन देखा और इसके लिए अपना आवेदन भेजने का निर्णय किया।

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
जयपुर हाउस, नई दिल्ली-110003
दूरभाष 23382835, 23384640(एक्स.नं.225)

चित्रकला कार्यशाला

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस, नई दिल्ली, विभिन्न तीन वर्ग समूहों, प्रत्येक वर्ग में 60 विद्यार्थियों की चित्रकला कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

कनिष्ठ समूह 5-8 वर्ष
मध्यम समूह 9-12 वर्ष
वरिष्ठ समूह 15-17 वर्ष
(कुल 180 विद्यार्थी)

इच्छुक विद्यार्थी राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस, नई दिल्ली में काउन्टर पर अपने आवेदन पत्र समेत 400 रूपए का पंजीकरण शुल्क जमा करा कर अपने नाम का पंजीकरण करा सकते हैं। पंजीकरण दिनांक 12 जुलाई 2008, प्रातः 10.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक। प्रत्येक वर्ग में 60 विद्यार्थियों के पूरा होने तक प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर किया जाएगा। (सोमवार अवकाश)

10.30 बजे से मध्याह्न 1.00 बजे तक कार्यशाला होगी।
सभी विद्यार्थियों को ड्राइंग बोर्ड, कागज़, रंग, ब्रुश व अन्य सामग्री स्वंय लानी होगी।
अभिभावक और इच्छुक विद्यार्थियों को कार्यशाला संबंधी राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के नियमों का पालन करना होगा।

www.theallpapers.com

आप अपने को नरेश यादव मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

For Examiner's Use

आवेदन पत्र
राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
जयपुर हाउस, नई दिल्ली-110003
दूरभाष 23382835, 23384640(एक्स.नं.225)

नाम...

आयु ....

स्थायी पता ....
....

दूरभाष ....

पिछले कितने वर्षों से चित्रकला में रूचि है ....

चित्रकला के किसी ख़ास रूप में रुचि है,
बताइए ....
....
....
....

[अंक: 7]

www.theallpapers.com

For Examiner's Use

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

प्रसिद्ध सितार वादक अनुष्का शंकर से पत्रकार विभा की बातचीत के कुछ अंश

विभा – अपने बचपन के बारे में कुछ बताइए?

अनुष्का – मेरा जन्म लंदन में हुआ। अपने बचपन के पहले दस साल मैंने लंदन में बिताए। मुझे नौ साल की उम्र से सितार बजाने की शिक्षा मिली। आप जानती हैं कि यह शिक्षा मुझे अपने पिता और सितार के जाने माने कलाकार पंडित रवि शंकर से मिली। अपने बचपन के दस साल लंदन में बिताने के बाद मैं 11 साल की उम्र में केलिफोर्निया चली गई। और मैंने संगीत की पहली प्रस्तुति 13 साल की उम्र में की।

विभा – इतनी कम उम्र से सितार बजाना आपने शुरू किया तो क्या आप शुरू से ही पेशेवर सितार वादक बनना चाहतीं थीं?

अनुष्का - मेरे मन में पेशेवर सितार वादक बनने की इच्छा तेज़ तब हुई जब मैं लगातार सितार बजाती रही। शुरू में तो मैं सिर्फ़ जानने की कोशिश ही करती रही। सितार के प्रति लगाव पैदा करने में मुझे कुछ साल तो लगे। हालाँकि मैं हमेशा सितार सुनती रहती थी लेकिन मैं इसे अपने जीवन में अपनाऊँ या नहीं इसके बारे में मैं पूरी तरह से सोच नहीं पाई थी।

विभा – इस कला को सीखने में मेहनत और साधना के अलावा आपके परिवार की क्या भूमिका रही?

अनुष्का - जो मैंने सीखा उसमें परिवार की परंपरा, सम्मान इस कदर शामिल था कि मैंने बचपन से किसी बात के लिए पिता को न करना या मना करना नहीं सीखा। यद्यपि यह सही है कि मेरे माता पिता ने हमेशा वह सबकुछ करने दिया जो मैं करना चाहती थी। छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ मैं जहां भी जाना चाहती थीं, मेरे माता पिता जाने देते थे।

विभा – यह बताइए कि अब तक आपके कितने एलबम आ चुके हैं?

अनुष्का - अब तक मेरे तीन एलबम आ चुके हैं। पहला एलबम मेरे अपने नाम से ही आया था यानी 'अनुष्का'। उसके बाद सन 2000 में 'अनुराग' नामक एलबम आया। तीसरा एलबम 'लाईव करनेगी हॉल' नाम से जारी किया गया है।

विभा - क्या आपको अपनी बहन नोरा जोन्स की सफलता से किसी किस्म की जलन होती है? वह भी पूरी दुनिया में काफी मशहूर गायिका रहीं हैं।

अनुष्का – मुझे लगता है कि मेरा जलना कुछ ऐसा ही होगा जैसे कि मैं ब्रिटनी स्पियर्स से जलूं। हम दोनों दो अलग किस्म का संगीत बजाते हैं और इसके बीच में किसी तरह की तुलना करना ठीक नहीं है। इसलिए अगर मैं अपनी बहन से जलूं तो यह बिल्कुल ठीक नहीं लगता।

www.theallpapers.com

आप अनुष्का शंकर के बारे में एक लेख लिखना चाहते हैं। नीचे लिखे शीर्षक या पहलूओं से जुड़ी बातों को संक्षेप में लिखिए।

For Examiner's Use

8 बचपन

....

....

....[2]

9 परिवार की भूमिका

....

....

....[2]

10 संगीत एलबम

....

....

....[2]

11 बहन से तुलना

....

....[1]

[अंक: 7]

www.theallpapers.com

अभ्यास 4 प्रश्न 12

निम्नलिखित लेख जो दांतों की समस्या पर केन्द्रित है उसे पढ़ने के बाद संक्षेप में लेख के मुख्य पहलुओं को अपने शब्दों में लिखिए।

आपका लेख संक्षिप्त और 100 शब्दों से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक तथा इनकी भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

दांतों के रोगों से बचाव

अमरीकी मेडिकल जर्नल में मशहूर दंत रोग विशेषज्ञ डा. जे. ए. सिंक्लेयर ने एक लेख में बढ़ते दंत रोगों का मूल कारण हमारे भोजन में विटामिन ए तथा सी की कमी का होना तथा अधिक गर्म और अधिक ठंडे पदार्थों का सेवन करना बताया है। भारत में दंत रोगों से पीड़ित लोगों का आंकड़ा 20 करोड़ से ज़्यादा है।

दंत रोगों में सबसे ज़्यादा पायरिया का प्रकोप है। पायरिया से बचाव के लिए मुँह और दांतों की समुचित सफाई बेहद ज़रूरी है। दांतों को साफ़ करने के लिए इस्तेमाल होनेवाले ब्रश की सफाई पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है जबकि इसे भी गर्म पानी से नियमित रूप से साफ़ करना ज़रूरी है।

पान, तंबाकू, सिगरेट-जैसी निरर्थक वस्तुओं के सेवन से मुंह की ग्रंथियों में विकृति आ जाती है और दांत कमज़ोर पड़ जाते हैं तथा रोगग्रस्त हो जाते हैं। भोजन के बाद यदि ठीक से मुंह साफ न किया जाए तो खाद्य पदार्थों के छोटे कण दांतों की झिर्री या जड़ों में अटक कर सड़न पैदा करते हैं और लैक्टिक एसिड बनाते हैं। इससे दांत गलने लगते हैं। ज़्यादा गर्म या ज़्यादा ठंडा भोजन भी दांतों के लिए हानिकारक है। अतः सामान्य तापक्रम के भोजन ही लेने चाहिए। दांतों की सुबह-शाम नियमित सफाई भी ज़रूरी है। बच्चों को चॉकलेट, फास्ट फूड, शीतल पेय आदि से बचाना चाहिए। दांतों की रक्षा के लिए व्यक्ति को नियमित रूप से नीबू, संतरा, मौसमी, आंवला, टमाटर-जैसे खट्टे फल तथा गाजर, मूली चुकंदर, पत्तेवाली सब्ज़ियाँ, गन्ना, मक्का आदि फल-सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

© UCLES 2008

www.theallpapers.com

For Examiner's Use

[10]

© UCLES 2008

[कृपया पृष्ठ पलटिए

www.theallpapers.com

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 13–20

चम्बा की घाटी पर आधारित निम्नलिखित लेख एक पत्रिका से लिया गया है। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

चम्बा की घाटी

कला पारखी डा. बोगल ने यूं ही चम्बा को अचंभा नहीं कह डाला था। और सैलानी भी इस नगरी में यूं ही नहीं खिंचे चले आते। चम्बा की वादियों में ऐसा कोई सम्मोहन ज़रूर है जो सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है और वे बार बार यहां दस्तक देने चले आते हैं। जहां मंदिर में उठती स्वर लहरियां परिवेश को आध्यत्मिक बनाती हैं वहीं रावी नदी की मस्त रवानगी और पहाड़ों से आते शीतल हवा के झोंके सैलानियों को ताज़गी का एहसास कराते हैं। चम्बा का इतिहास, कला, धर्म और पर्यटन का मनोहरी मेल है और चम्बा के लोग अलमस्त, फक्कड़ तबीयत के। चम्बा की पहाड़ियों को ज्यों ज्यों हम पार करते हैं, आश्चर्यों के कई वर्क सामने खुलते चले जाते हैं। प्रकृति अपने दिव्य सौन्दर्य की झलक दिखलाती है। चम्बा के सौन्दर्य को आत्मसात करने के बाद ही डा. बोगल ने इसे अचंभा कहा होगा।

चम्बा का यह सौभाग्य रहा कि उसे एक से एक बड़ा कलाप्रिय, धार्मिक और जनसेवक राजा मिला। इन राजाओं के काल में न सिर्फ़ यहाँ कि लोककलाएँ फली फूलीं अपितु इनकी ख्याति चम्बा की सीमाओं को पार करके पूरे भारत में फैली। इन कलाप्रिय नरेशों में राजश्रीसिंह (1844), राजारामसिंह (1873) व राजा भूरि सिंह (1904) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वास्तुकला हो या भित्तिचित्रकला, मूर्तिकला हो या काष्टकला, जितना प्रोत्साहन इन्हें चम्बा में मिला शायद ही अन्यत्र कहीं मिला हो। चम्बा कलम शैली ने खास अपनी पहचान बनाई है। किसी घाटी की ऊंचाई पर खड़े होकर देखें तो समूचा चम्बा शहर भी किसी अनूठी कलाकृति जैसा ही लगता है। ढलानदार छतों वाले शहर, शिखर शैली के मंदिर, हरा भरा इसका चौगान और इसकी पृष्ठभूमि में यूरोपीय प्रभाव लिए महलों का वास्तुशिल्प सहसा ही मन मोह लेता है। यहाँ के प्राचीन रंगमहल व अखंडचंडीमहल में घूमते हुए अतीत की पदचाप भी सुनी जा सकती है।

चम्बा के संस्थापक राजा साहिल वर्मा ने 920 ई. में इस शहर का नाम अपनी बेटी चम्बा के नाम पर क्यों किया था, इस बारे में एक रोचक किंवदंती प्रचलित है। कहा जाता है कि राजकुमारी चंपावती बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी और नित्य स्वाध्याय के लिए एक साधु के पास जाया करती थी। एक रोज़ राजा को किसी कारणवश अपनी बेटी पर संदेह हो गया। शाम को जब साधु के आश्रम में बेटी जाने लगी तो चुपके से राजा भी उसके पीछे हो लिया। बेटी के आश्रम में प्रवेश करते ही जब राजा भी अंदर गया तो उसको कोई वहां दिखाई न दिया। लेकिन तभी अंदर से एक आवाज़ गूंजी कि उसका संदेह निराधार है और अपनी बेटी पर शक करने की सज़ा के रूप में उसकी निष्कंलक बेटी छीन ली जाती है। साथ ही राजा को एक मंदिर बनाने का आदेश भी प्राप्त हुआ। चम्बा नगर के ऐतिहासिक चौगान के पास स्थित इस मंदिर को लोग चमेसनी देवी के नाम से पुकारते हैं। वास्तुकला की दृष्टि से यह मंदिर अद्वितीय है। इस घटना के बाद राजा साहिल वर्मा ने नगर का नामकरण राजकुमारी चंपा के नाम पर किया, जो बाद में चम्बा कहलाने लगा।

www.theallpapers.com

For Examiner's Use

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और ग़लत का निशान लगाकर दीजिए। साथ ही वह वाक्य भी लिखिए जिसके कारण वाक्य सही या गलत साबित होता है।

	सही	ग़लत
उदाहरण - चम्बा की वादियों में ज़रूर कोई जादू है जो लोग खींचे चले आते हैं।	☐	✔

औचित्य - कोई सम्मोहन है जो सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है और वे बार बार यहां दस्तक देने को चले आते हैं।

....

13 मंदिर में उठती आवाजें माहौल को आध्यत्मिक बना देती हैं। ☐ ☐

....

14 चम्बा ऐसी जगह है जहाँ इतिहास है लेकिन उसका कला के साथ कोई संगम नहीं होता। ☐ ☐

....

15 चम्बा के लोग मनमौजी और मस्त होते हैं। ☐ ☐

....

16 डा. बोगल ने चम्बा की प्रकृति को आत्मसात करने के पहले ही इसे अचंभा कहा होगा। ☐ ☐

....

17 चम्बा का सौभाग्य रहा इस कथन का क्या अभिप्राय है?

....[1]

18 समूचा चम्बा शहर भी किसी अनूठी कलाकृति जैसा ही लगता है। इस वाक्य का क्या अर्थ है?

....[1]

19 राजा ने अपनी बेटी पर संदेह होने पर क्या किया?

....[1]

20 राजा को अपनी बेटी पर संदेह की क्या सज़ा मिली?

....[1]

[अंक:10]

[कृपया पृष्ठ पलटिए

© UCLES 2008

www.theallpapers.com

अभ्यास 6

आपकी मनपसंद पुस्तक
अपनी एक मनपसंद पुस्तक के लेखक को पत्र लिखिए, जिसमें लिखिए कि इन किताबों ने किस तरह आपके जीवन को बदलने में अहम भूमिका निभाई है।

आपका पत्र 150 या 200 शब्दों से ज़्यादा नहीं होना चाहिए।
लिखित पत्र पर अंक विषय संबंधी अंर्तवस्तु, शैली और सही भाषा लिखने पर दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक: 20]

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2008

www.theallpapers.com